डायमण्ड कॉमिक्स

D.293 4.00

फौलादी सिंह और जहरीला षडयंत्र

एक धमाके आ रहा है!

कार्टूनिस्ट प्राण का

चाचा चौधरी और राका का इंतक़ाम

डायमंड कामिक्स का 300वां अंक

62 रंगीन पृष्ठों में

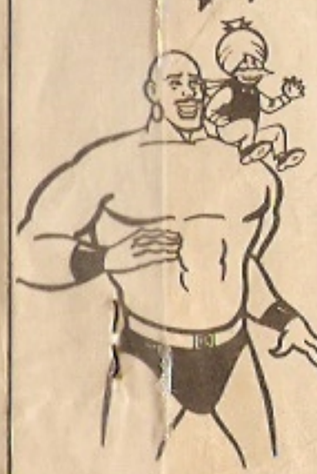

खौफ़नाक राका ने वैद्यराज चक्रमाचार्य की अद्भुत दवाई पी रखी है, जिससे वह मर नहीं सकता। समुद्र में व्हेल मछली के पेट में वह चिरनिंद्रा सो रहा था, कि अचानक उसकी नींद खुल गई। फुंकारता हुआ वह पृथ्वी पर आ गया। कम्प्यूटर से तेज दिमाग़ वाले चाचा चौधरी और ताकत-वर साबू के सामने राका एक बार फिर चुनौती बनकर खड़ा हो गया।

रहस्य रोमांच व साहसिक घटनाओं से भरपूर राजीव के बाल उपन्यास

डायमंड बाल पाकेट बुक्स में

चाचा चौधरी और रहस्यमय उल्लू	3.00
चिम्पू और सफेद प्रेत	3.00
फौलादी सिंह का अपहरण	3.00
मामा भांजा और रूपनगर की राजकुमारी	3.00
ताऊ जी और काना राक्षस	3.00
लम्बू मोटू और काले बादल	3.00
चाचा भतीजा जादूगरनी कुनानकुनकुन	3.00
अण्डेराम डण्डेराम और पीपल वाला प्रेत	3.00

कार्टूनिस्ट प्राण का अंकुर और गोगो 4.00
लटू और मंजू उस्ताद 4.00
पकलू और लकड़ी के चोर 4.00
चाचा भतीजा और कातिल मशीनें 4.00
फौलादी सिंह और जहरीला षड़यंत्र 4.00
लम्बू मोटू और डाक्टर अफलातून 4.00

डायमंड कामिक्स प्रा.लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

प्रकाशक : डायमंड कामिक्स प्रा. लि. 2715 दरियागंज, नई दिल्ली-110002
सम्पादक : गुलशन राय कथानक : अश्वनी चित्रांकन :— जुगल किशोर
मुद्रक : बेस्ट फोटो आफसैट प्रिन्टर्स, ओखला फेस 2, नई दिल्ली

New India E.L.C.T. and Comics Store

फौलादी सिंह और जहरीला षड़यंत्र

सम्पादक- गुलशन राय

कथानक- अश्वनी 'आशू'

चित्रांकन- जुगल किशोर

अगर स्थिति की गम्भीरता का एहसास किसी को एक सप्ताह पहले हुई उस रहस्यमय घटना से ही हो गया होता तो शायद आज चौथी दुर्घटना पेश न आयी होती।

एक सप्ताह पहले...

...हुआ यह था कि ब्रिटिश एयर लाईंस 107 विमान लन्दन से वाशिंगटन की नियमित उड़ान पर था- जिसमें 355 यात्री सवार थे।

अचानक दोनों पायलटों ने एक साथ देखा-

ए...!

अरे!

मुख्य पायलट ने तुरन्त अपने बेस पर रेडियो द्वारा सूचना भेजी-

हम अपने रास्ते में... विमान से लगभग पचास मील दूर एक विचित्र और रहस्यमय से चमकते हुए चक्र को देख रहे हैं!

ओह! वह चक्र तेजी से विमान की ओर आ रहा है हमने मार्ग भी बदल दिया. लेकिन वह सूर्य की तरह चमकता चक्र तेजी से घूमता हुआ निरन्तर हमारे निकट आता जा रहा है. साथ ही उसका आकार बढ़ता जा रहा है...

फिर एकाएक पायलट का मुंह खुला का खुला रह गया. दोनों पायलटों के मुंह आश्चर्य से फटे हुए थे। और उन्हें अपने सामने घूमते चक्र के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। बेस (कन्ट्रोल टावर) से लगातार आवाज़ आ रही थी।

हलो- बोईंग 707... जवाब दो. हलो... हलो... बोईंग 707 हलो...

फिर अचानक कन्ट्रोल रूम से आने वाली बैरवलाहट भरी आवाज आनी भी बन्द हो गयी... क्योंकि अब विमान कन्ट्रोल रूम के राडार की नजरों से ओझल हो चुका था।

हलो... सिक्योरिटी चीफ... बोईंग 707 राडार की नजरों से ओझल हो चुका है! शायद कोई बड़ी दुर्घटना या सम्भव है विमान हवा में फट गया हो- इस समय बोईंग 707 जबकि वह राडार की नजरों से ओझल हुआ- स्थिति यह है- कृपया नोट कीजिये...

कन्ट्रोल रूम में अब दुर्घटना की सूचना प्रसारित होने लगी थी- जिसे निकटवर्ती सभी हवाई अड्डों पर सुना जा रहा था।

उफ़! क्या है यह?

अरे... यह क्या?

अगले ही क्षण बिल्कुल वैसा ही चक्र विमान के अन्दर बैठे यात्रियों ने देखा...

चक्र!

ओह! नहीं!

यह कहां से आ गया?

इसका क्या मतलब?

कहीं यह कोई मुसीबत तो नहीं?

पता नहीं क्या है यह?

मुझे तो डर लग रहा है!

लेकिन सिर्फ दो मिनट बाद... सबसे पहले दोनों पायलटों के दिमाग को झटका सा लगा- मानो उन पर छाये सम्मोहन का प्रभाव एकाएक समाप्त हो गया हो।

हैं! अरे!!

कहां गया वह चक्र?

ओफ! क्या था वह सब?

क...कहीं हम सपना तो नहीं देख रहे थे?

बिल्कुल नहीं!

और जब मुख्य पायलट ने माईक पर बोलना शुरू किया उसका सम्पर्क हवाई अड्डे से जुड़ा हुआ था।

हलो... मैं बोईंग 707 का मुख्य पायलट बोल रहा हूं... हलो...

हवाई अड्डे के कन्ट्रोल रूम की राडार स्क्रीन पर अचानक बोईंग 707 को देखकर और पायलट की आवाज सुन कर आपरेटर हैरत से उछल पड़ा।

ए! असम्भव! य...यह कैसे हो गया?

होते हुए दो मिनटों में बोईंग 707 के राडार स्क्रीन से गायब होने की घटना की सूचना दुनिया भर के हवाई अड्डों पर पहुंच चुकी थी।

आश्चर्यजनक! राडार स्क्रीन से गायब हुआ विमान फिर स्क्रीन पर प्रकट हो गया।

विमान सकुशल है! कमाल है!

पायलट का कहना है उन दो मिनटों में जिनमें उनका सम्पर्क कटा रहा उन्हें नहीं पता कि क्या हुआ था।

(बोईंग 707 विमान) के अन्दर...

अरे! वह कहां गये जो यहां बैठे थे?

मेरे साथ जो एक जापानी अधेड़ व्यक्ति बैठा था-वह अब नहीं है।

इस प्रकार कुल मिला कर उस विमान में से नौ व्यक्ति रहस्यमय ढंग से गायब हो चुके थे- और यह सारे व्यक्ति अलग-अलग देशों के विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक थे।

और जैसा कि स्वाभविक था- इस घटना ने पूरे विश्व को न केवल चौंका दिया- बल्कि प्रत्येक देश के लिये यह वर्तमान समय की सबसे बड़ी चिन्ता, समस्या और परेशानी का कारण बन गयी। दोनों पायलटों से बार-बार इस घटना का विवरण मांगा जा रहा था।

उफ... मैं बता चुका हूं कि जब वह चमकता हुआ चक्र हमारे बिल्कुल सामने आ गया तो उसके दो मिनट बाद तक क्या हुआ मुझे कुछ नहीं मालूम दो मिनट पहले मैं जिस स्थिति में था- दो मिनट बीतने के बाद भी मैंने अपने आपको उसी स्थिति में पाया था।

इसका मतलब तुम दोनों पायलट और विमान में मौजूद अन्य सब व्यक्तियों ने वह चमकता हुआ चक्र देखा और सम्मोहित हो गये...

सारांश यह कि... उस चमकते हुए चक्र ने विमान में सवार प्रत्येक व्यक्ति को दो मिनट के लिये सम्मोहित अथवा स्तब्ध कर दिया था- और उस विमान को राडार की नजरों से ओझल करने के साथ ही उसका रेडियो सम्पर्क भी काट दिया था- और इन्हीं दो मिनटों में किसी रहस्यमय ढंग से विमान को हवा में एक क्षण के लिये भी रोके बिना विमान में सवार नौ श्रेष्ठ वैज्ञानिकों को गायब कर दिया गया था- यह बात इसलिये भी सच मानी जा सकती है कि भले ही विमान में मौजूद किसी व्यक्ति को उन दो रहस्यपूर्ण मिनटों की कोई बात अथवा दृश्य याद नहीं था- लेकिन विमान अपनी सामान्य गति से अपनी मंजिल की ओर बढ़ता रहा था।

यह निष्कर्ष तो निकाल लिया गया- लेकिन इस बारे में कोई कुछ नहीं बता सका कि यह काम किसका हो सकता है? कुछ लोग अनुमान लगा रहे थे कि यह काम किसी अन्य ग्रह वासियों का है!

मेरा ख्याल है कि किसी दूसरे ग्रह के वैज्ञानिक पृथ्वी के योग्य व्यक्तियों का अपहरण करके उन्हें अपने ग्रहपर ले जा रहे हैं!

किसी ने रूस का नाम लिया तो किसी ने अमरीका का- जबकि गायब हुए नौ वैज्ञानिकों में से एक अमरीकन और एक रूसी वैज्ञानिक भी शामिल था।

यह काम रूस का नहीं, अमरीका का नहीं, तो फिर किसका है?

कोई बाहरी शक्ति!

कोई तीसरी शक्ति!

किसी अन्य ग्रह की कारवाई!

या फिर पृथ्वी के ही किसी अपराधी दिमाग के वैज्ञानिक की कारस्तानी!

और अभी इस पहली रहस्यपूर्ण दुर्घटना की सनसनी समाप्त भी न हुई थी कि एक रूसी यात्री विमान भी बिल्कुल वैसी ही दुर्घटना का शिकार हो गया-

रूसी विमान में सवार पांच वैज्ञानिक गायब...

हवा में उड़ते रूसी विमान के साथ भी बिल्कुल वैसी ही घटना घटी जैसी ब्रिटिश एयर लाईंस के बोईंग 707 के साथ घटी थी- इस रूसी विमान में से पांच वैज्ञानिक गायब हुए- दो कनाडियन दो ब्रिटिश-एक जर्मन! इस विमान में सवार प्रत्येक व्यक्ति ने चमकता चक्र देखा था- और दो मिनट के लिए स्तब्ध अथवा सम्मोहित हो गया!

और उनके क्या परिणाम निकले-

यह डा० जॉन के यापू का एक विशेष सम्रक्षण कक्ष था- जिसमें कोई खिड़की, रोशनदान, दरवाजा तो क्या किसी अदृश्य से गुजरने लायक छिद्र भी न था। इस कक्ष में पहुंचने के बाद डा० जॉन विशेष और लम्बू ऑक्सीजन अपनी वैज्ञानिक पोशाक से लेते थे। डा० जॉन यापू के नीचे अपने शरीर की त्वचा जैसी हरे की ही पोशाक पहने रहते हैं- यही बात भारत और अन्तरिक्षक की तो इन्हें आक्सीजन की जरूरत नहीं पड़ती- और यदि कभी जरूरत पड़े भी तो इनमें अन्दर ऐसी व्यवस्था थी कि यह स्वयं कृत्रिम आक्सीजन तैयार कर सकते हैं!

भारत, अन्तरिक्षक अपनी ताजा रिपोर्ट दो

जो आज्ञा स्वामी!

लेकिन हम दोनों में से पहले कौन अपनी रिपोर्ट दे!

भारत तुम अपनी रिपोर्ट दो!

जो आज्ञा स्वामी! ताजा समाचार यह है कि वह शक्ति जिसने अब तक चौदह वैज्ञानिक गायब किये हैं अफ्रीका के उन घने बीहड़ों में है- जिनकी भयानकता और रहस्यमयता के चर्चे पूरी दुनिया में फैले हुए हैं- अर्थात जहां स्थल मार्ग से आजतक कोई व्यक्ति नहीं पहुंच सका और अगर पहुंचा और सौभाग्य से लौट भी आया तो उसने उन बीहड़ों के ऐसे किस्से कहानी सुनाये कि लोग थर्रा उठे- रोमांचित हो उठे- अथवा डर गये जबकि वह सब किस्से सत्य कम कल्पित अधिक नजर आते हैं।

भारत- बात को बढ़ाओ मत- तुम जानते हो कि पूरी दुनिया के लिये जो प्रदेश अनबूझ पहेली के समान है हम उनके चप्पे-चप्पे की जानकारी रखते हैं।

यस- यानि कि जी हां- मैं सब कुछ जानता हूं- दरअसल यह सब मैंने इसलिये बताया कि उस तीसरी शक्ति ने यही सोच कर अपना स्टेशन उन बीहड़ों में स्थापित किया है कि वह हमेशा दुनिया की नजरों से छुपा रहे- क्योंकि वहां तक कभी कोई पहुंचेगा- और न ही उसका भेद खुलेगा।

New India E.L.C.T. and Comics Store

जबकि मैं न केवल वहां ही पहुंचा बल्कि चौदह वैज्ञानिक घायल करने वाली उस शक्ति को देखा भी...! वहां एक विशालतम यूनिगत अड्डा है। जिसका क्षेत्रफल पांच सौ वर्ग मील है- और वहां का विज्ञान शेष पृथ्वी के विज्ञान से लगभग दो हजार वर्ष आगे है- वहां लगभग दो सौ कर्मचारी जिनमें अधिकतर श्रेष्ठ वैज्ञानिक और तकनीशियन दिन रात काम करते हैं- उनकी मदद के लिए लगभग एक हजार मशीनें और रोबोट हैं- वहां ऐसे अस्त्रों का विशाल भण्डार है जिससे कुछ ही मिनटों में पूरी पृथ्वी की आबादी नष्ट कीजा सकती है।

और अब मैं बताता हूं कि आकाश में उड़ते विमानों में से चौदह वैज्ञानिक कैसे गायब किये गये- दरअसल उस अड्डे पर स्थित वैज्ञानिकों ने ऐसे कम्पयूटरों का निर्माण किया है जो टार्गेट पर पहुंच कर सम्पूर्ण व्यवस्था को अपने अधिकार में कर लेते हैं- यही कारण है कि दोनों विमान अपनी सामान्यगति से उड़ते रहे- पर उनमें सवार व्यक्ति अपहरण कर्त्ताओं द्वारा प्रयोग किए गये कम्पयूटरों की शक्ति के आधीन हो सम्मोहित हो गये- उन्हें चमकते चक्र के अतिरिक्त कुछ नजर नहीं आया- और उस समय जबकि विमानों में सवार यात्री सम्मोहित थे- उन वैज्ञानिकों को अफ्रीका के बीहड़ो में स्थित अड्डे पर टेलीपोर्ट कर लिया गया!

यह तो तुमने साधारण रिपोर्ट पेशकी है- जबकि मुझे उम्मीद थी तुम इससेभी कुछ अधिक जानकारी एकत्र करके लाए होंगे?

इसका मतलब- भारत और अन्तरिक्षक जो भी महत्वपूर्ण जानकारी लाए हैं- वह सब उन्होंने गुप्त रूप से चीफ रोबोट को सौंप दी है- जिसे अब सिर्फ डा० जॉन ही प्राप्त कर सकते हैं- उनके अतिरिक्त कोई अन्य शक्ति किसी भी माध्यम से वह जानकारी हासिल नहीं कर सकती!

ओह! समझा!

मैं भी समझ गया अंकल

इस वार्तालाप के समाप्त होते ही वह सब उस कक्ष से गायब हो गए-

और पलभर बाद ही वह एक अन्य विशेष कक्ष में प्रकट हुए- जहां चीफ रोबोट पहले से ही एक यान्त्रिक कुर्सी साहित मौजूद था।

आप सबको मेरा प्रणाम!

स्वीकार किया

जीते रहो!

कुछ ही क्षण बाद उस विशेष प्रकार की कुर्सी पर बैठे डा० जॉन को भारत तथा अन्तरिक्ष द्वारा चीफ रोबोट को दी गयी गुप्त जानकारी प्राप्त कर रहे थे.

बीप बीप बीप

मिस्टर चीफ रोबोट क्या इस कुर्सी पर बैठने के बाद हर कोई वह जानकारी प्राप्त कर सकता है जो इस समय डा० जॉन प्राप्त कर रहे हैं?

जी नहीं, स्वामी (डा० जॉन) के अतिरिक्त कोई भी अन्य व्यक्ति वह जानकारी प्राप्त नहीं कर सकता।

क्यों, ऐसी क्या खास बात है इस कुर्सी में?

वह खास बात यह है कि जब तक इस मशीन के यन्त्र स्वामी (डा० जॉन) की शारीरिक गन्ध प्राप्त नहीं करेंगे- तब तक वह निष्क्रिय बने रहेंगे- और यदि कोई व्यक्ति इसे सक्रिय करने के लिये इसके यन्त्रों के साथ किसी प्रकार की छेड़छाड़ करेगा तो यह कुर्सी मोम की तरह पिघल जायेगी- और साथ ही अपने साथ छेड़छाड़ करने वाले व्यक्ति को भी जला कर राख बना देगी!

चीफ रोबोट ने उस स्क्रीन की विशेषता बता कर सबको चकित कर दिया- और वह सब गहरी उत्सुकता से कुर्सी पर बैठे डा० जॉन के चेहरे को देखने लगे- डा० जान के चेहरे पर इस समय ऐसे भाव अंकित थे मानों वह कुर्सी जो जानकारी उनके दिमाग में स्थानान्तरित कर रहा है वह अविश्वसनीय है!

फिर एकाएक सबने डा० जॉन के चेहरे पर बौखलाहट देखी- फिर अगले ही क्षण डा० जान एक झटके से खड़े हो गये- उसी क्षण चीफ रोबोट उनके सिर से हेलमेट उतारने के लिए सक्रिय हो गया।

ओह! नहीं... अविश्वसनीय!

क्या हुआ अंकल?

खतरा!

अविश्वसनीय. जैसी क्या बात हो गयी अंकल?

भयानक षडयन्त्र!

फौलाद! हमारी पृथ्वी से जीवन समाप्त होने वाला है!

क्या कह रहे हो अंकल?

पृथ्वी से जीवन भला कोई क्यों- और कैसे समाप्त कर सकता है?

मेरे बच्चो... जहां एक ओर विज्ञान मनुष्य के लिये वरदान साबित हुआ है तो वहीं वह एक अभिशाप भी है। पृथ्वी पर ही जन्म लेने वाला एक श्रेष्ठ वैज्ञानिक पृथ्वी का सम्पूर्ण जीवन समाप्त करके पृथ्वी पर एक नई दुनिया बसाना चाहता है। जो एक दम सन्तुलित और समस्या रहित होगी!

ऐसी कोशिश आज से पहले और भी कई बार की जा चुकी है- अंकल- पर यह कभी किसी के लिये सम्भव नहीं हो सका कि, वह पृथ्वी पर बसी वर्तमान दुनिया (समस्त प्राणी) को समाप्त करके अपनी मनचाही दुनिया बसा सके- ऐसे विकृत विचारों वाले शक्ति सम्पन्न पागल वैज्ञानिकों को हमारे तथा पृथ्वी के अन्य रक्षकों के हाथों मात खानी पड़ी है।

पर फौलाद इस बार हमारे पास समय का अत्यधिक अभाव है- हमें बहुत देर से यह सब कुछ ज्ञात हुआ है- और फिलहाल हम अपराधी तक पहुंचने में असमर्थ हैं- क्योंकि वह अपराधी पृथ्वी के विनाश का स्विच दबा दबाचुका है!

क्या मतलब? स्विच दबा चुका है? यानि कि पृथ्वी पर आक्रमण हो चुका है?

ऐसा ही समझो फौलाद कि पृथ्वी पर आक्रमण हो चुका है- लेकिन अभी हमारे पास एक मिनट का समय है।

क्योंकि पृथ्वी के विनाश के लिये अन्तरिक्ष में कहीं एक स्टेशन बनाया गया है- जहां एक विशाल संयत्र रखा है- स्विच दबते ही उस सयंत्र ने काम करना शुरू कर दिया है और एक मिनट पूरा होते ही...

... वह संयत्र हजारों ऐसे बम उगल देगा जो संयत्र से निकलते ही सीधे पृथ्वी की एक कक्षा- (शून्य) में ट्रासमिट हो जायेंगे- और वहां से वह बम किसी अन्तरिक्ष यान की तरह शून्य को भेदते हुए... पृथ्वी के वायुमण्डल में प्रविष्ठ होकर पहले से ही निश्चित अपने- अपने ठिकानों पर पहुंच कर फट जायेंगे।

और वह बम पृथ्वी के वायुमण्डल को जहरीला बना देंगे- जिससे पृथ्वी के सभी प्राणी मर जायेंगे- ऐसा ही होगा न अंकल?

हां, ऐसा ही होने जा रहा है फौलाद! और हम...

... इस वार्तालाप में अपने बहुमूल्य बीस सेकिण्ड बर्बाद कर चुके है!

अंकल... मैं, लम्बू भारत और अन्तरिक्षक अन्तरिक्ष में जा रहे हैं- और जब तक हम चारों में से एक भी जीवित रहेगा- तब तक दुश्मन के विनाश कारी संयत्र से निकला एक भी बम पृथ्वी के वायु- मण्डल में प्रविष्ट नहीं हो सकेगा!

फौलाद के भाषण की समाप्ति के साथ ही किसी ने भी अगला क्षण व्यर्थ न जाने दिया- वह सब वहां से गायब हो गये।

मेरी शुभकामनाऐं तुम्हारे साथ है- मेरे बच्चों तुम्हें अन्तरिक्ष में भेज कर मैं भी यहां बैठ कर तमाशा नहीं देखूंगा- बल्कि ऐसा कुछ करूंगा जिससे इस बार भी मनुष्य के पागलपन की पराजय और मनुष्यता की विजय हो!

टापू के उस विशिष्ट कक्ष से गायब होकर फौलाद, लम्बू, भारत और अन्तरिक्षक तो पृथ्वी के वायु मण्डल से बाहर शून्य (अन्तरिक्ष) में प्रकट हुए

और डा० जॉन टापू के ही एक अन्य गोलाकार कक्ष में प्रकट हुए-

लेकिन वास्तव में यह कोई कक्ष (कमरा) नहीं था- बल्कि यह एक विशाल- काय मशीन का गर्भ (पेट) था- जिसमें प्रविष्ट होने के लिये एक दरवाजा भी था। लेकिन इस समय चूंकि डा० जॉन जल्दी में थे- इसलिये वह ट्रांसमिट होकर सीधे मशीन के इस अन्दरूनी हिस्से में प्रकट हुए थे।

किसी ऐसे समय के लिए तो मैंने इस प्लानिंग कम्प्यूटर का निर्माण किया था!

अब जबकि मेरे पास इतना समय नहीं है कि मैं दुश्मन के द्वारा रचे गए षड़यन्त्र को विफल बनाने के लिये कोई ऐसा कारगर कदम उठा सकूं या कोई ऐसा चक्रव्यूह बना सकूं जिसमे दुश्मन गिरफ्तार हो जाये।

तो अब इस समय यह कम्प्यूटर वह काम करेगा- अर्थात ऐसी गुप्त योजना बना कर मुझे देगा- जिससे यकीनन दुश्मन की पराजय हो जानी चाहिए।

और अगर ऐसा न हुआ अर्थात इस कम्प्यूटर की योजना कामयाब न हुई तो मैं समझूंगा कि मेरा यह आविष्कार व्यर्थ साबित हुआ!

मन ही मन अपने विचारों में डूबे डा॰ जॉन एकाएक बोल उठे-

हलो- मिस्टर प्लानिंग चीफ*... क्या तुम मेरे विचार पढ़ रहे हो?

जी हां, मैं आपके विचार पढ़ रहा हूं- खेद है कि आप मेरी योग्यता पर सन्देह कर रहे हैं- जबकि आज से पहले मुझे आपने अपनी योग्यता दिखाने का कोई महत्वपूर्ण अवसर ही प्रदान नहीं किया है- ताकि मैं अपनी योग्यता की धाक आप पर जमा पता!

* मिस्टर प्लानिंग चीफ- यह इस कम्प्यूटर का नाम है- जिसके गर्भ में इस समय डा॰ जॉन खड़े हैं-

डा॰ जॉन कम्प्यूटर की बात सुनते हुए एक कुर्सी पर विराजमान हो गये।

इस बार तुम्हें वह अवसर मिल रहा है मिस्टर प्लानिंग चीफ- मैं अपने मस्तिष्क को तुम्हारे हवाले कर रहा हूं- इस समय सारे हालात मेरे मस्तिष्क में हैं- मेरे मस्तिष्क को पढ़कर तुम एक शानदार योजना बना कर अपनी आयोगिता तथा योग्यता साबित करके दिखाओ!

जो आज्ञा स्वामी!

इस कुर्सी पर बैठते ही डा॰ जॉन का मस्तिष्क कम्प्यूटर के सम्पर्क में आ गया- और उनके मस्तिष्क को पढ़कर कम्प्यूटर ने यह जानकारी हासिल कर ली कि इस समय डा॰ जॉन क्या समस्या लेकर उसके पास आए हैं- और यह सब जान लेने के बाद कम्प्यूटर के इस अन्दरूनी हिस्से में दर्जनभर लाल रंग के बल्ब जल उठे- और चारों ओर से धीमी खर्र-खर्र की सी आवाजें आने लगी- इसका यह मतलब था कि कम्प्यूटर ने डा॰ जॉन की समस्या समझ ली है- और अब उस समस्या से निबटने के लिए योजना बना रहा है!

कुछ ही देर बाद...

स्वामी! योजना आप लिखित रूप में लेंगे या सीधे आपके मस्तिष्क में स्थानान्तरित कर दूं!

इस बात का निर्णय तुम स्वयं ही करो!

सुरक्षा की दृष्टि से मेरे निर्णय के अनुसार मुझे यह योजना आपके मस्तिष्क में स्थानान्तरित करनी चाहिए- और मैं अपने रिकार्ड में से भी इसे निकाल दूंगा- ताकि अन्य कोई भी शक्ति मेरे रिकार्ड को चैक करके यह न जान सके कि मैंने आपको कौन सी योजना दी थी?

New India E.L.C.
Comics Store
Jandiala Road

और फिर कम्प्यूटर ने डा० जॉन को जो योजना बताई उससे डा० जॉन पूरी तरह सन्तुष्ट थे।

तुम्हारी योजना मुझे पसन्द आयी है- उसमें तुमने अपने जिम्मे भी कुछ काम लिए हैं- अब तुम योजनानुसार काम शुरू कर दो- मेरे जिम्मे जो काम है वह सब मैं समयानुसार निबटा लूंगा!

इस बीच अन्तरिक्ष में फौलाद, लम्बू भारत और अन्तरिक्षक ने पृथ्वी को अपने घेरे में ले लिया था- और उन चारों के मस्तिष्क एक दूसरे के सम्पर्क में थे- इस स्थिति में वह जो कुछ भी सोच अथवा देख रहे थे- उसकी जानकारी शेष तीनों को तुरन्त हो जाती थी।

साथियो, सिर्फ दस सेकिण्ड बचे हैं तैयार हो न?

तैयार हैं!

मैं भी तैयार हूं!

बिल्कुल तैयार हूं दोस्त!

और ठीक दस सेकिण्ड बाद

सावधान! दुश्मन के जहरीले कम्प्यूटर बमों की पहली खेप आ रही है- मगर यह सब मेरी सीमा में है- इसलिये इनसे मैं ही निबटूंगा।

आ पहुंचे जहरीले कम्प्यूटर बम!

भारत ने एक क्षण के एक हजारवें हिस्से में उन सभी कम्प्यूटर बमों को निशाना बना दिया।

धड़ाम

और अभी कम्प्यूटर बमों की उस पहली खेप के विस्फोट बन्द भी न हुए थे कि फौलाद के क्षेत्र में दूसरे ही कम्प्यूटर बमों की दूसरी खेप प्रकट हुई।

यह मेरी सीमा में हैं इनसे मैं निबटूंगा।

और फौलाद ने दूसरी खेप में प्रकट हुए उन जहरीले कम्प्यूटर बमों को भारत से भी अधिक तेजी से घातक किरणों के निशाना बनाया।

ठीक वैसे ही बम अन्तरिक्षक और लम्बू के निकट प्रकट हुए-

यह मेरे क्षेत्र में है!

धड़ाम

और यह मेरे हिस्से में आयेंगे!

और अन्तरिक्ष में प्रकट हो रहे इन कम्प्यूटर बमों का दृश्य देखने वाले सिर्फ पृथ्वी पर डा० जॉन ही नहीं थे... बल्कि...

सुदूर अन्तरिक्ष में कहीं स्थित इस अन्तरिक्ष नगर में भी देखा जा रहा था।

ओह! यह क्या हो रहा है- यह कौन है- जो हमारे कम्प्यूटर बमों को नष्ट कर रहा है

दिलचस्प तथा हैरानी की बात यह थी कि इस अन्तरिक्ष नगर में एक भी मनुष्य नहीं था- लेकिन मनुष्य जैसे ही दिखने वाले उत्तम श्रेणी के रोबोट (यन्त्र मानव) थे।

दो मानवों और दो कम्प्यूटरों ने पृथ्वी के प्राणियों को समाप्त करने के लिए भेजे गये हमारे समस्त जहरीले कम्प्यूटर बम नष्ट कर दिये।

हमारे कम्प्यूटर ने अभी-अभी सूचना दी है कि हमारे बमों को नष्ट करने वाले इन दोनों मानवों और दोनों कम्प्यूटरों को पृथ्वी पर स्थित एक टापू से हमारे कम्प्यूटर बमों के रास्ते में भेजा गया है।

नम्बर सिक्स... कन्ट्रोलर से निर्देश प्राप्त करो! और यह दोनों मानव और इनके साथी दोनों कम्प्यूटर हमारे आपरेशन के लिये बहुत अधिक हानिकारक साबित हो सकते हैं। जिसका एक नमूना इन्होंने हमारे कम्प्यूटर बमों को नष्ट करके पेश किया है।

मैं कन्ट्रोलर से सम्पर्क स्थापित करता हूं!

कन्ट्रोलर सुरक्षा यूनिट ने तुम्हें बता दिया होगा कि हमारे साथ कैसी दुर्घटना घटित हुई है... इस सम्बन्ध में आपरेशन स्क्वायर का चीफ आपसे निर्देश चाहता है।

पहला निर्देश कम्प्यूटर बमों को नष्ट करने वालों को यूनिट फोर के हवाले कर दो- यूनिट फोर अपनी सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग करके उन्हें नष्ट कर दे।

हमारा दूसरा निर्देश ऑपरेशन स्टेशन (अन्तरिक्ष नगर) को उसके वर्तमान स्थान से हटा कर पृथ्वी की 170° कोण और एल्फा सिक्स टार्गेट पर स्थापित करो- तीसरा निर्देश- कम्प्यूटर बमों को नष्ट करने वाले जहां से आये हैं वहां अटैक करने के लिए यूनिट नम्बर थ्री को आदेश दो- चौथा निर्देश- यूनिट नम्बर थ्री उस समय तक अटैक चालू रखे जब तक उसका टार्गेट नष्ट न हो जाये- अथवा हमारा आपरेशन स्क्वायर सम्पूर्ण न हो जाये- फिलहाल इन निर्देशों पर अमल करो- अगले निर्देश तुम्हें समय-समय पर सुरक्षा यूनिट के माध्यम से प्राप्त होते रहेंगे।

अगले दो क्षणों में ही काँधिक कन्ट्रोलर के निर्देशानुसार ऑपरेशन स्टेशन अर्थात इस अन्तरिक्ष नगर का विशालकाय द्वार खुला और उसमें से दो शटलयान निकले।

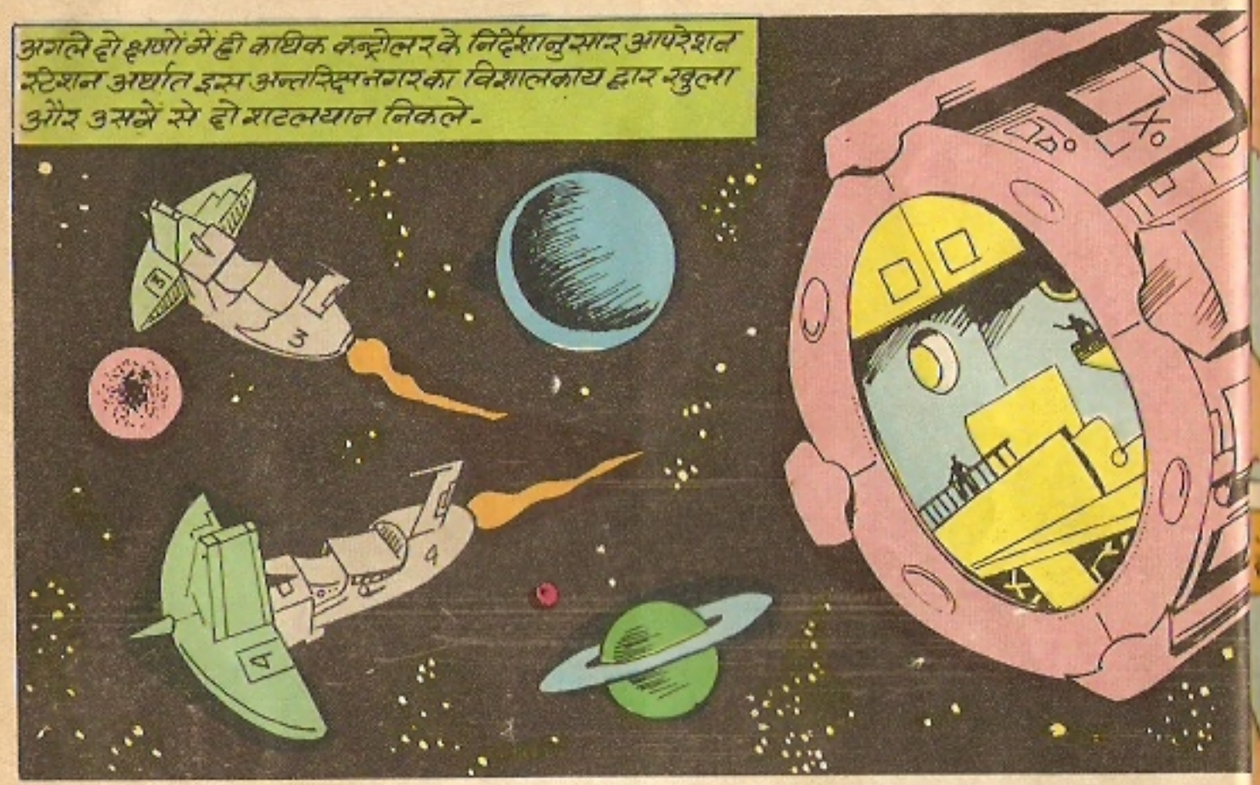

यूनिट थ्री और यूनिट फोर नाम अन्तरिक्ष शटल यानों को उगलते ही अन्तरिक्ष नगर भी कन्ट्रोलर के निर्देशानुसार अपना नया स्थान ग्रहण करने के लिये गतिशील हो गया।

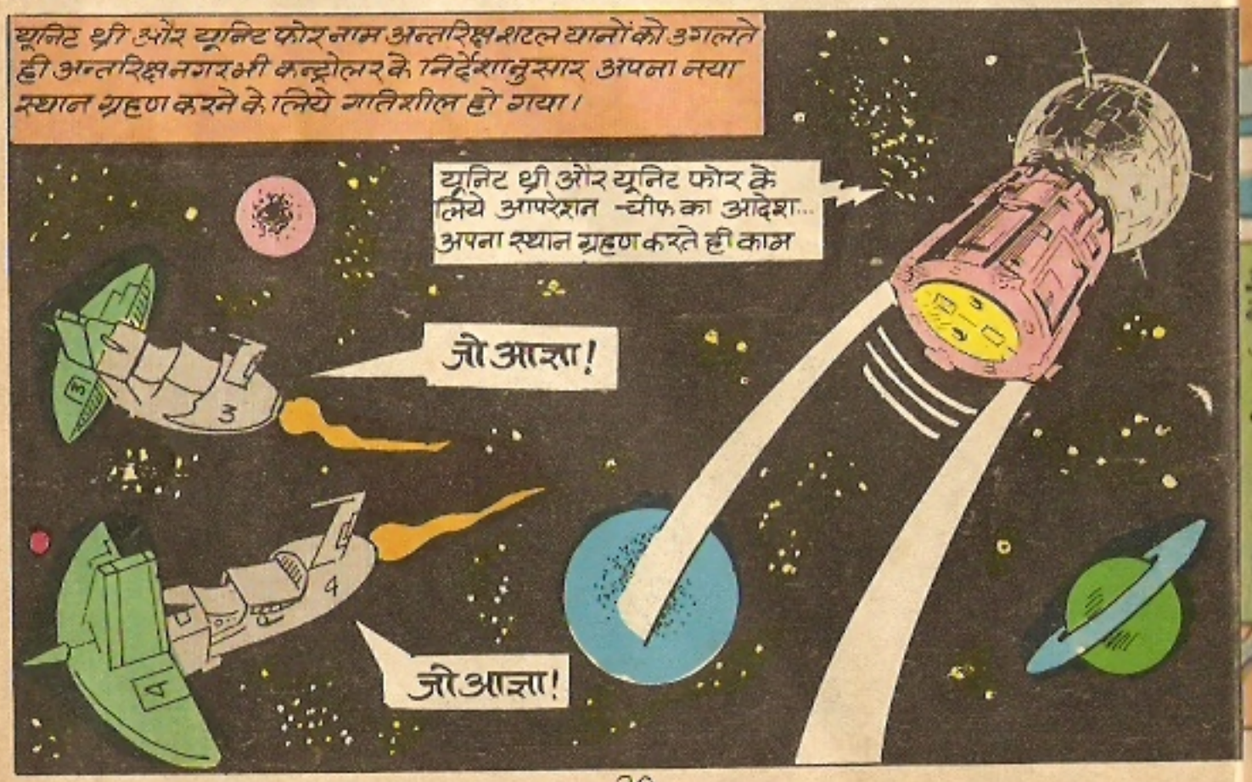

और फिर - प्राप्त आदेशानुसार यूनिट फोर नामक अन्तरिक्ष शटल यान वहां प्रकट हुआ। जहां फौलाद, लम्बू, भारत और अन्तरिक्षक अपनी अगली योजना बना रहे थे।

और इससे पहले कि वह चारों इस यान के बारे में कुछ और वार्तालाप कर पाते उन्हें यान के द्वारा दागी गयी घातक किरणों से बचने के लिये इधर-उधर बिखर जाना पड़ा।

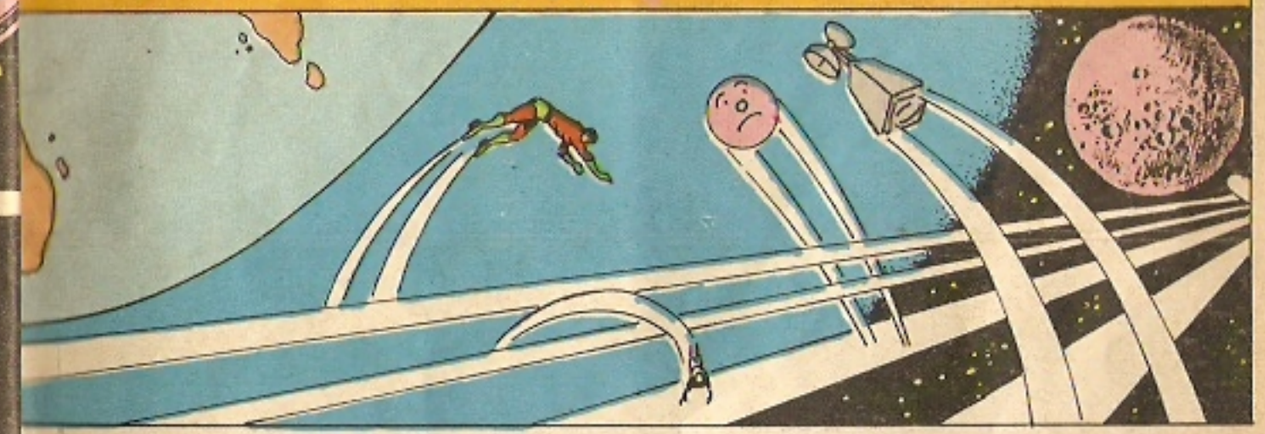

इधर पृथ्वी पर यूनिट नम्बर थ्री नामक अन्तरिक्ष शटल यान पृथ्वी के वायुमण्डल को भेदने के लिये झपटता चला आ रहा था।

लेकिन तभी उन चारों के मस्तिष्क में डा० जॉन की आवाज़ उभरी...

इस यान को पृथ्वी के वायुमण्डल में प्रविष्ट होने दो... तुम अपनी रक्षा करो... और हमलावार यान को नष्ट कर दो... सिग्मा फोर किरणें इन यानों पर असरदार साबित होंगी।

डा० जॉन के निर्देश की समाप्ति के साथ ही यूनिट थ्री नामक वह शटल पृथ्वी के वायुमण्डल को भेदता हुआ...

...डा० जॉन के टापू के ऊपर पहुंच गया।

शटल ने टापू का एक चक्कर पूरा करते ही टापू को घातक किरणों का लक्ष्य बनाना चाहा... लेकिन...

ओह! अभेद्य सुरक्षा कवच और अदृश्य!

हलो- आपरेटर चीफ... मुझे तुरन्त आपरेशन स्वायर के कन्ट्रोलर का निर्देश चाहिए!

उस बीच अपने ही सौरमण्डल के ग्रह बृहस्पति पर...

सब कुछ योजनानुसार हो रहा है- आपरेशन स्वायर के अन्तर्गत डा० जॉन की पूरी शक्ति व्यस्त है- उसे मेरी उपस्थिति का कोई आभास नहीं है।

...इसलिये अब मैं बड़ी आसानी से सबसे पहले फौलाद लम्बू, भारत और अन्तरिक्षक का अपहरण करूंगा- दूसरा नम्बर डा० जॉन का होगा और तीसरा नम्बर होगा डा० जॉन के टापू का...

लेकिन तभी कन्ट्रोल रूम में खड़ा यह अज्ञात षड्यन्त्रकारी बुरी तरह हड़बड़ा उठा- क्योंकि सामने लगी स्क्रीनों में से चार स्क्रीनों पर नजर आ रहे दृश्यों में एकाएक परिवर्तन हुआ था एक स्क्रीन पर कन्ट्रोलर वाला अन्तरिक्ष नगर था, दूसरी स्क्रीन पर आपरेशन स्वायर वाला अन्तरिक्ष नगर था- और तीसरी स्क्रीन पर यूनिट फोर वाला यान था- और चौथी स्क्रीन पर यूनिट थ्री वाला यान था- और इस व्यक्ति के दिल को जबरदस्त आघात पहुंचाने वाली बात यह थी कि- चारों स्क्रीनों पर फौलाद, लम्बू, भारत और अन्तरिक्षक एकाएक प्रकट हो गये थे- जबकि अब तक वह सिर्फ उस स्क्रीन पर नजर आ रहे थे जिस पर यूनिट नम्बर फोर वाला शटल था।

अरे! यह क्या?!?

य... यह कैसे हो सकता है ?! नहीं, नहीं- डा० जॉन के यह दोनों सहायक और दोनों कम्प्यूटर चारों स्थानों पर नही हो सकते..

... निश्चित रूप से तीन स्थानों पर फौलाद और उसके साथी नकली हैं।

असली फौलाद - सिर्फ यूनिट फोर के पास है- वह चारों एक पल के लिये यूनिट फोर के पास से नहीं हटे- उनके यहां मौजूद रहते ही डा० जॉन ने शेष तीनों स्थानों पर नकली फौलाद और उसके साथी पहुंचा दिये हैं। ताकि मैं धोखा खा जाऊं।

ल- लेकिन मैं ?

यह कैसे हो सकता है... डा० जॉन को मेरे अस्तित्व का अहसास भला कैसे हो सकता है- क्योंकि मैंने अब तक अपने आपको छुपाये रखा- मेरी मौजूदगी के बारे में तो सिर्फ मैं ही जानता हूं- निश्चय ही डा० जॉन ने यह अनुमान लगाया होगा कि उसके इन मशीनी दुश्मनों के पीछे इनका निर्माता होगा- जो इनकी कार्रवाई देख रहा होगा- और वह चाहता है कि...

मैं प्रकट हो जाऊं! हां, हां, निश्चय ही वह मक्कार यही चाहता है- उसने चार-चार फौलाद एक साथ इसीलिए दिखवाये हैं कि अपनी मशीनी व्यवस्था को खतरे में देखकर मैं हरकत में आ जाऊं - अर्थात अपने दोनों अन्तरिक्ष नगरों और दोनों शटल यानों को बचाने के लिये..

यहां से कन्ट्रोलर को कोई आदेश दूं- या फौलाद पर हमला करूं- ताकि डा० जॉन मेरे द्वारा आदेश प्रसारित करते समय की रेडियो वेव्ज़ कैच करके जान जाए कि मैं कहां हूं- इसी प्रकार हमला करूंगा तो वह यहां से रवाना होने वाले कम्प्यूटर बमों का उद्गम खोज लेगा।

हा-हा-हा- पर मैंने उसकी यह चालाकी पकड़ ली है- अब मैं ऐसी व्यवस्था करूंगा कि जिससे मेरा मकसद भी हल हो जायेगा और डा० जॉन मेरे इस अन्तरिक्ष नगर को भी नहीं खोज पायेगा- जहां कि इस समय मैं मौजूद हूं!

यह शनि ग्रह है- जहां मेरा यह उपग्रह 'ड्रैगन' स्थापित है- मैं पहले ड्रैगन को निर्देश दूंगा- फिर ड्रैगन के माध्यम से मेरे निर्देश कन्ट्रोलर तक पहुंच जायेंगे।

ड्रैगन! सावधान! कन्ट्रोलर को आदेश दो... यूनिट नम्बर चार के पास वाला फौलाद और उसके साथी असली हैं- अस्ली स्वतरा उन्हीं से है- ड्रोप बीम का प्रयोग करो और उन्हें समाप्त कर दो- मगर ध्यान रहे ड्रोप बीम सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं- उनका प्रयोग सावधानी से किया जाये!

जो आज्ञा स्वामी!

इस बीच पृथ्वी पर डा० जॉन को अन्तरिक्ष में फैले अपने जासूस कम्प्यूटरों से सूचना मिली...

स्वामी बृहस्पति ग्रह से शनि ग्रह पर एक उपग्रह को जो निर्देश भेजे गये हैं उन्हें रिकार्ड कर लिया गया है- और अब वह उपग्रह कन्ट्रोलर नाम के अन्तरिक्ष नगर के लिये वही आदेश प्रसारित कर रहा है-

ठीक है, कन्ट्रोलर नाम के अन्तरिक्ष नगर के पास तो भारत और अन्तरिक्षक हैं- मैं उनसे सम्पर्क स्थापित करके उनके माध्यम से वह रेडियो वेव्ज़ कैच करता हूं- जो शनि ग्रह पर स्थित उपग्रह से प्रसारित हो रही हैं-

और अब इस उपग्रह से भी मैंने अपना रेडियो सम्पर्क काट दिया- ताकि डा० जॉन रेडियो वेव्ज़ का पीछा करके मुझ तक न पहुंच सके।

हा, हा, हा, डाक्टर सीराज यानि कि मेरा सपना पूरा होकर रहेगा! यह व्यर्थ की भीड़ भाड़ जो दिन प्रतिदिन पृथ्वी पर बढ़ती जा रही है- यह पृथ्वी को खोखला कर रही है- यह पृथ्वी के गर्भ में छुपे खनिजों को खा रही हैं- जबकि उन खनिजों का बेहतर इस्तेमाल होना चाहिए- और यह तभी सम्भव होगा जब अगले कुछ मिनटों में मैं पृथ्वी के समस्त प्राणियों को वाष्प बना दूंगा- तब वहां श्रेष्ठ वैज्ञानिक और तकनीशियन पहुंचेंगे जो विज्ञान के विकास में जुट जायेंगे फिर मैं ब्रह्माण्ड के उन ग्रहों की खोज करूंगा जहां जीवन है- और जहां विज्ञान है- मैं उनसे दोस्ती करूंगा उन्हें जीतूंगा... हा... हा... हू...

और शनी ग्रह से प्रसारित आदेश को सुनने के लिये डा० जॉन को सिर्फ एक स्विच दबाना पड़ा.

बाकी सारा काम हमेशा सक्रिय रहने वाले स्वचालित कम्प्यूटरों ने डा० जॉन और जासूस कम्प्यूटर का वार्तालाप सुनते समय ही पूरा कर दिया

ड्रैगन! सावधान! कन्ट्रोलर को आदेश दो... यूनिट नम्बर चार के पास वाला फौलाद और उसके साथी असली हैं।

इस समय डा० जॉन ने जो स्विच दबाया था इसका सम्बन्ध उस कम्प्यूटर से था जो इस समय 'प्लानिंग चीफ' नाम के कम्प्यूटर के सम्पर्क में था- अब यह कम्प्यूटर यहां होने वाले वार्तालाप को रिकार्ड करने के साथ-साथ प्लानिंग चीफ तक पहुंचाने का काम कर रहा था।

... अस्ली स्वतरा उन्हीं से है- ड्रोप बीम का प्रयोग करो और उन्हें समाप्त कर दो- मगर ध्यान रहे ड्रोपबीम सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं- उनका प्रयोग सावधानी से किया जाए।

शायद पाठक अभी भूले न होंगे कि इस समय डा० जॉन प्लानिंग चीफ की बनाई प्लानिंग (योजना) के अनुसार ही काम कर रहे हैं।

और जैसे ही उपग्रह ने आदेश प्रसारित करना बन्द किया वैसे ही डा० जॉन के सामने की एक स्क्रीन रोशन हो उठी. और उस पर विशालकाय रोबोट प्रकट हुआ.

ओह! तो मिस्टर प्लानिंग चीफ ने अपनी योजना में मामूली सा परिवर्तन कर दिया है. लेकिन उस रोबोट बुलडोजर को भेजा कहां जा रहा है?

अगले ही क्षण वह विशालकाय रोबोट जिसे डा० जॉन ने रोबोट बुलडोजर कहा था. रानी ग्रह के उपग्रह के पास प्रकट हुआ...

हा, हा, हा, तो यह बात थी. प्लानिंग चीफ बुलडोजर रोबोट से उपग्रह का अपहरण करवा रहा है- यानि कि प्लानिंग चीफ अभी भी यही दर्शाना चाहता है कि अब तक वृहस्पति ग्रह पर छुपे इस षडयन्त्र के नायक तक नहीं पहुंचे हैं।

मैं जानता हूं कि वह उससे बच नहीं पायेगा।

पकड़ा गया. और अब डा० जॉन उपग्रह की जांच करके यह पता लगाने की कोशिश करेगा कि उपग्रह को कौन आदेश देता था. पर अपनी इस कोशिश में वह कामयाब नहीं होगा. क्योंकि...

... यह ड्रैगन नाम के मेरे उस बहुउपयोगी... उपग्रह का रिमोट कन्ट्रोल यहां है- इस स्विच के दबते ही उपग्रह नष्ट हो जायेगा।

खट

रिमोट कन्ट्रोल का बटन दबते ही-

उधर वृहस्पति ग्रह पर स्थित अन्तरिक्ष नगर के कन्ट्रोल रूम में...

अरे! नहीं, ओह! यह क्या?... डा० जॉन का रोबोट मेरे उपग्रह को पकड़ रहा है- उपग्रह उससे बचने की और उसे समाप्त करने की कोशिश तो कर रहा है लेकिन...

सचमुच बहुत काबिल है डा० जॉन- लेकिन मेरा नाम भी सीराज है- मैं उसे यह कभी भी नहीं जानने दूंगा कि मैं यहां हूं... वृहस्पति ग्रह पर! वह अपने अभेद टापू के...

... कन्ट्रोल रूम में कितने इत्मीनान से बैठा है... काश! यह दुष्ट मेरा सहयोगी होता- तो अब तक पृथ्वी पर मेरे सपनों की दुनिया बस चुकी होती।

अब मुझे अपने कन्ट्रोलर से ही आशा है कि वह इन बिगड़े हालातों पर विजय पा ले- वरना फिर मुझे ही मैदान में आना होगा- जबकि ऐसा मैंने सोचा भी नहीं था।

और इधर चूंकि कन्ट्रोलर नाम के उस अन्तरिक्ष नगर में उपग्रह द्वारा भेजा गया आदेश पहुंच चुका था- जिस पर कन्ट्रोलर ने अमल करना आरम्भ कर दिया था।

यूनिट फोर- जिनसे तुम मुकाबला कर रहे हो यही असली मोहरें हैं- इन्हें ड्रोप बीम के निशाने पर लो- जिनका निशाना कभी नहीं चूकता- जो अपने लक्ष्य का पीछा करते हुए उसे वाष्प बना देती हैं!

जो हुक्म!

उसी क्षण यूनिट फोर नाम के उस अन्तरिक्ष शटल ने अपनी स्थिति में परिवर्तन किया।

फौलाद, लम्बू, अन्तरिक्षक सावधान! यह कुछ ऐसा करने वाला है- जो हमारे लिये घातक साबित हो सकता है।

कैसा खतरा?

खतरा!

और अगले ही क्षण शटल ने ड्रोप बीम दागी।

घातक किरण

सबसे पहले उन किरणों को भारत ने पहचाना:

ओह! यह ड्रोप बीम है- यह अन्त तक हमारा पीछा नहीं छोड़ेगी.

वह चारों इधर उधर बिखर कर अपनी पूरी क्षमता से भागे- जबकि वह शटल अपने स्थान पर स्थिर होकर ड्रोपबीम्स् को नियन्त्रित कर रहा था।

लेकिन इन ड्रोप बीम्स् की यह विशेषता थी कि इनका लक्ष्य जितनी तेज भागता था- यह उससे दुगनी गति से उनका पीछा करती थी।

शीघ्र ही भारत, अन्तरिक्षक और लम्बू ड्रोप बीम्स् का शिकार बन गये।

...मगर फौलाद को अपने पीछे लगी ड्रोपबीम को अब तक रुका पाने में कामयाबी हासिल थी।

और अब तो शटल में बैठा चालक रोबोट भी पज़ल हो उठा था।

तभी तो वह उस समय ड्रोपबीम को नियन्त्रित नहीं कर पाया- जबकि फौलाद शटल से टकराया-

चड़ाम

और फौलाद का यह बलिदान व्यर्थ नहीं गया था- उसके पीछे लगी ड्रोप बीम भी उसी समय फौलाद से टकराई जबकि फौलाद शटल से टकराया था- और फौलाद को भेदती ड्रोप बीम शटल से भी टकरा गयी थी।

फ्रिक

फलस्वरूप वहां अब न फौलाद था और नही शटल- हां वाष्प रूपी धूंवा सा उभर दिख रहा था- दुर्घटना स्थल पर-

बृहस्पति ग्रह पर खड़े अन्तरिक्ष नगर के कन्ट्रोल रूम में एकाएक इस हंगामे के नायक का अट्टहास गूंज उठा...

हा...हा... हा... चारों खत्म हो गये... यह चारों ही तो डा० जॉन की आधी शक्ति कहलाते थे- हा...हा... इसका मतलब है डा० जॉन की आधी पराजय- या उसका आधा सर्वनाश! हा... हा... हा...

लेकिन अचानक ही उसके नेत्रों में सन्देह के भाव सिमट आए...

न...लेकिन यह शैतान क्यों मुस्कुरा रहा है?

क्या इसे फौलाद की मौत का गम नहीं? है? मगर ऐसा कैसे हो सकता है।

श...शायद नष्ट होने वाला फौलाद असली न हो- उसके साथी असली न हों- वह मात्र डमी हों!??

हुम्ब! लगता है यही सच है- वरना इस समय यह मक्कार बूढ़ा -सिर पटक-पटक कर रो रहा होता।

लेकिन कोई बात नहीं- असली फौलाद नहीं मरा है तो अब मर जायेगा- अब तो कन्ट्रोलर अन्तरिक्ष नगर और आपरेशन स्क्वायर अन्तरिक्ष नगर के साथ-साथ यूनिट थ्री ने भी अपने पास मौजूद फौलाद और उसके साथियों पर ड्रोम बीमस् दाग दी हैं।

इन तीनों में से एक टीम तो असली होगी ही...

हा... हा... हा... तो अब छाती पीटता नजर आयेगा- यह अपने आपको सुप्रीम पावर समझने वाला घमण्डी बूड्ढा!

लेकिन डा० जॉन यह जानते हुए भी कि यह ड्रोप बीमस् अन्त तक भी अपने लक्ष्य का पीछा नहीं छोड़ती- वह शान्त निश्चिन्त तथा पूर्णतया सन्तुष्ट मुद्रा में बैठे वह हौलनाक दृश्य देख रहे थे-

मिस्टर प्लानिंग चीफ ने सचमुच कामयाब योजना बनाई है- यह षड़यन्त्र जो आरम्भ में इतना गहरा और सर्वनाशी महसूस हो रहा था अब लगता है जैसे यह बच्चों का खेल हो रहा है।

और इस बार तो कन्ट्रोलर नामक अन्तरिक्ष नगर से छोड़ी गयी ड्रोप बीमस् ने सबसे पहले फौलाद को ही शिकार बनाया था- तब भी डा० जॉन के होठों पर तैरती निश्चिन्तता भरी मुस्कुराहट में कोई अन्तर नहीं आया-

एक-एक करके कन्ट्रोलर ने बाकी तीनों का शिकार कर लिया।

लेकिन इधर डा० जॉन के टापू पर मौजूद शटल का भी वही अंजाम हुआ जो पहले शटल का हुआ था- अर्थात अन्त में बचा फौलाद शटल से टकराया-

फौलाद के साथ ही टकराई ड्रोम बीम...

धड़ाम

और वह वाष्प के धुएं में परिवर्तित हो गया।

आपरेशन स्क्वायर नाम का अन्तरिक्ष नगर भी विजेता रहा-

लेकिन अब भी डा० जॉन को न तो फौलाद और लम्बू की मौत का गम था और न ही अपने बहुउपयोगी, दुर्लभ कम्प्यूटरों (भारत और अन्तरिक्षक) के नष्ट हो जाने का अफसोस था।

और यही बात ऐसी थी- जिसने वृहस्पति ग्रह पर स्थित अन्तरिक्ष नगर के स्वामी को विचलित किये दे रही थी।

चारों टोलियां समाप्त हो गयी- जिनमें निश्चित रूप से एक टोली असली थी- लेकिन अब भी यह मक्कार बूढ़ा विजेता के भाव में मुस्कुरा रहा है- क्या भेद है इसकी मुस्कुराहट के पीछे? इसकी यह मुस्कुराहट तो अब मुझे विचलित कर रही है।

अब जबकि मेरे दोनों अन्तरिक्ष नगर सुरक्षित हैं और पृथ्वी पर आक्रमण करने का रास्ता साफ है- तब भी मेरी हिम्मत क्यों नहीं हो रही कन्ट्रोलर को आदेश देने की कि वह पृथ्वी पर आक्रमण कर दे?!

...निश्चय ही मेरी हिम्मत को डा० जॉन की रहस्यमयी विजेताओं जैसी मुस्कुराहट कमजोर कर रही है- जिसका सिर्फ एक ही अर्थ हो सकता है कि फौलाद इत्यादि अभी भी जीवित है!?

अचानक

तुमने बिल्कुल ठीक कहा- श्रीमानजी!

अ... क-कौन?

हाय! नहीं!!?

त-... तुम फौलाद!?

जी हां, और अब अपने इस गुप्त अन्तरिक्ष नगर में हमें अपने सामने सही सलामत देख कर हैरान और परेशान होने का नाटक बन्द कीजिये- और अपनी पराजय कबूल करके डा० जॉन की शरण में चलिये!

ताकि सम्भव है... शायद वह आपको यह समझा सकने में कामयाब हो जाये कि विज्ञान मानव और सृष्टि के विनाश के लिए नहीं बल्कि सृजन के लिये है।

मूरख! मुझे पराजय स्वीकार करने के लिये- उपदेश दे रहा है... जब यह नहीं जानता कि अब मैं हारी हुई बाजी जीतने जा रहा हूं- दोनों को बन्धक बना कर मैं डा० जॉन को अपाहिज बना दूंगा- उसे विवश कर दूंगा कि वह मेरे साथ सहयोग की नीति अपनाये- ताकि पृथ्वी पर एक नई सभ्य और विकसित दुनिया बसाने का मेरा सपना साकार हो सके!

क्या सोचने लगे श्रीमान जी?

मैं यह सोच रहा हूं कि तुम्हें बन्धक बनने के लिये मुझे अपने शरीर को कोई भी हरकत नहीं देनी पड़ेगी।

यह देखो, यहां के कम्प्यूटर मेरे मुंह से आवाज़ निकलते ही सक्रिय हो उठते हैं-

हा-हा-हा- अब तुम पत्थर के बुत की तरह स्थिर हो- हां, सुन, बोल और सोच-समझ सकते हो- जिससे कि न तो तुम्हें आजादी मिल सकती है और न ही तुम मुझे हानि पहुंचा सकते हो

डाक्टर सीराज- तुम्हारी सेवा में यहां फौलाद और उसका प्यारा दोस्त लम्बू उपस्थित हुए हैं- जिनके जिस्मों पर डा० जॉन के द्वारा आविष्कृत पो है

ह! नहीं?

कहने का मतलब यह है जनाब सीराज साहब कि तुम्हारी स्त करने वाली उन किर का जिनके द्वारा तुमने पृथ्वी के हवाई अड्डे उड़ने वाले विमानों में सवार व्यक्तियों को स्त व सम्मोहित कर दिय हम पर कोई असर न हुआ।

यह असम्भव है- मेरे इस अन्तरिक्ष नगर में ऐसी व्यवस्था है कि इसमें प्रविष्ट होते ही बाहर से आई वैज्ञानिक शक्ति निष्क्रिय हो जाती है।

इस अन्तरिक्ष नगर में यह भी तो व्यवस्था है सीराज साहब कि कोई भी बाहरी व्यक्ति जैसे ही अवैध रूप से इस अन्तरिक्ष नगर में प्रविष्ट होगा- तुम्हें तुरन्त उसकी जानकारी हो जायेगी- जबकि तुम देख ही रहे हो कि हमारे आगमन की खबर तुम्हें नहीं लगी-

हलो- संचालक... सावधान! हम खतरे में हैं- अन्तरिक्ष नगर को यहां से उड़ा ले चलो!

क्षमा करें श्रीमान! हम सिर्फ अपने स्वामी के आदेश का पालन करते हैं!

त... लेकिन यह सब हो कैसे गया?

बहुत आसानी से हो गया यह सब कुछ डा० जॉन के टापू के संचालक कम्प्यूटरों ने आधा मिनट पहले तुम्हारे इस अन्तरिक्ष नगर में एक विशेष तकनीक से अपने जासूस तकनीशियन कम्प्यूटरों को ट्रांसमिट कर दिया था- जिन्होंने आवश्यकतानुसार इस अन्तरिक्ष नगर के यन्त्रों कम्प्यूटरों इत्यादि में पार्श्वर्तित कर दिये गये हैं- इसलिए अब यानि कि इस समय इस अन्तरिक्ष नगर को पृथ्वी से यानि कि डा० जॉन के टापू से नियन्त्रित किया जा रहा है।

न... नहीं!

मैं तुम्हारा स्वामी हीतो हूं- क्या तुम मेरी आवाज़ की तरंगों को, मेरे शरीर की गन्ध को नहीं पहचान रहे?

हमारे स्वामी पृथ्वी पर हैं- उनका नाम डा० जॉन है- उनकी आवाज़ की तरंगे और उनके शरीर की गन्ध हम पहचानते हैं।

लेकिन अभी- अभी तो तुमने मेरी इच्छानुसार स्तब्ध तथा सम्मोहित करने वाली किरणें फौला पर फेंकी थी?

डा० जॉन का आदेश था कि जब तक तुम पर यह प्रकट न हो जाये कि अब इस अन्तरिक्ष नगर के स्वामी डा० जॉन है तब तक मैं यह दिखावा करूं कि यह अन्तरिक्ष नगर तुम्हारे ही आधीन है।

और वही कम्पयूटर विमान का सम्पर्क हवाई अड्डो से काट देते थे- तथा विमान को उसी स्थिति में उसके निर्धारित मार्ग पर आगे बढ़ाते रहते थे-

लेकिन इस षडयन्त्र के पीछे तुम्हारा मकसद क्या था?

और अब चूकि तुम पराजित हो चुके हो- इसलिये मेरे कुछ सवालों का जवाब दो- पहला सवाल यह है कि वह घूमते प्रकाश वाला चक्र क्या था जो उन विमान चालकों तथा विमान में सवार उन सभी यात्रियों को नज़र आता था- जिनमें से कुछ यात्रियों का अपहरण किया था?

उस चक्र के दो लाभ थे- पहला यह कि उस चक्र को देखने वालों का मस्तिष्क उस चक्र पर केन्द्रित हो जाता था- जिससे...

...वह जल्दी तथा आसानी से सम्मोहित हो जाते थे- दूसरा लाभ यह था कि उस चक्र को देखे जाने की कहानी जब यात्री तथा विमान चालक पृथ्वी पर लौट कर सुनाते थे- तो वह चक्र एक रहस्य बन जाता था- सब उस चक्र के बारे में ही सोचते थे- अगर वह चक्र न दिखाया जाता तो सम्भव है ऐसा कोई व्यक्ति जिस पर सम्मोहित करने वाली किरणों का असर कम हुआ हो- तो वह विमान में ट्रासमिट किये गये उन कम्पयूटरों को देख सकता था- जो विमान के कुछ स्वान्स यात्रियों को ट्रासमिट करके मेरे पास पहुंचाते थे

में पृथ्वी पर एक सभ्य तथा विकसित दुनिया बसाना चाहता था- मेरी उस दुनिया में श्रेष्ठ वैज्ञानिक और टेकनीशियन होते जो अगले कुछ ही वर्षों में पृथ्वी के विज्ञान को हजारों वर्ष आगे ले जाते- मेरी उस दुनिया में सुख- वैभव- तथा शान्ति होती- गिने चुने आदमी होते जो सुख चैन का शानदार जीवन व्यतीत करते।

यानि कि तुम अपनी हवस की पूर्ति के लिये पृथ्वी के अरबों इन्सानों को मार डालते?

वीराज! ऐसा सपना देखने और उसे साकार करने का षड़यन्त्र रचने वाले तुम पहले व्यक्ति ही नहीं हो- तुमसे पहले भी अपनी शक्ति के नशे में चूर होकर ऐसा घिनौना सपना कई सिर-फिरे व्यक्ति देख चुके हैं- पर कामयाबी किसी को नहीं मिली- उनमें से कुछ पागल हो गये- कुछ ने आत्म हत्या कर ली- और कुछ जेलों में सड़ रहे हैं- ऐसे दो सिर-फिरे वैज्ञानिकों का डा० जॉन ब्रेनवाश करके उन्हें समझ बूझ वाला इन्सान बना कर छोड़ चुके हैं- जो वर्तमान समय में मजदूरी करके अपनी रोजी रोटी कमा रहे हैं- एक क्रूर प्रकृति वाले की खोपड़ी में बन्दर का दिमाग फिट करके उसे अपने एक अन्तरिक्ष नगर में स्वतन्त्र छोड़ दिया है।

तुम भी उन्हीं में से एक हो- बोलो अपने लिये कौन सी सजा उपयुक्त समझते हो?

म...म... उफ...! हां... मैं पराजित हो चुका हूं- मेरे जीवनभर का परिश्रम मेरी असीमित शक्ति और मेरा यह मशीनी संसार सब कुछ तुमने छीन लिया- मैं कुछ क्षण पहले तक अपने आपको पृथ्वी का सबसे अधिक शक्तिशाली सामर्थ्यवान तथा धनवान समझता था- अब मेरी स्थिति भिखारी जैसी है।

मैंने अपने जीवन में कभी पराजय का मुंह नहीं देखा- विजेताओं द्वारा शानदार जीवन व्यतीत-

किया है मैंने स्वामी बनकर रहा हूं कैदी बनने का तो स्वप्न भी नहीं देखा था मैंने.

और अब जबकि सब कुछ गंवा चुका हूं मैं- कैदी बनना स्वीकार करने की बजाय मर जाना बेहतर समझता हूं!

यह कहने के साथ ही उसने बेहद फुर्ती से अपना सीधा हाथ मुंह की ओर उठाया।

लेकिन मुंह तक पहुंचने से पहले ही उसका हाथ स्थिर हो गया-

ओह! नहीं!

नहीं डाक्टर सीराज- डा० जॉन नहीं चाहते कि तुम आत्म-हत्या करो- इसलिये उनके आदेश पर यहां के किसी कम्प्यूटर ने तुम्हारे हाथ को स्थिर कर दिया- है... क्योंकि वह तुम्हारे मस्तिष्क को पढ़ कर जान चुका है कि तुम्हारे इस हाथ की उंगली में जो अंगूठी है उसमें लगे नग के नीचे विषैला पाउडर है- जिसे जीभ पर रखते ही तुम मुर्दा बन जाओगे।

डा० सीराज अपने आपको विवश देख कर एकाएक पागलों की तरह चीखते हुए रो उठा-

नहीं sss मत रोको मुझे... मैं मर जाना चाहता हूं- मुझे मर जाने दो- आsss ह...

अचानक उसी स्थिति में उसका जिस्म अनगिनत अणुओं में बदल गया.

और फिर गायब हो गया-

फौलाद! अब हमें भी इस अन्तरिक्ष नगर के तहखाने में बन्द उन सभी वैज्ञानिकों को जिनका डा० सीराज ने आकाश में उड़ते विमानों में से अपहरण करवाया था- निकालकर डा० जॉन के पास पहुंचाना चाहिये- जो कि कन्ट्रोलर नाम के अन्तरिक्ष नगर में हमारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

सीराज डा० जॉन के सामने प्रकट हुआ जो उससे एक क्षण पहले ही प्रकट हुए थे-

डा० सीराज तुम्हारे ही अन्तरिक्ष नगर में मैं तुम्हारा स्वागत करता हूं!

त...त...तुम डा० जॉन?

अब तुम इस कुर्सी पर बैठ जाओ- क्योंकि तुम्हारे विकृत मस्तिष्क को थोड़ी सी सफाई की जरूरत है।

स-स-सफाई- मतलब ब्रेनवाश- मस्तिष्क परिवर्तन!

डा० सीराज ब्रेनवाश से आतंकित होकर भागा- उसे अफ़सोस था उसके दोनों हाथ उसके मस्तिष्क का आदेश ग्रहण नहीं कर रहे थे- वरना वह भागने की बजाय अंगूठी का नग हटा कर उसके नीचे भरा पाउडर जीभ पर रखकर अपने जीवन का अन्त कर लेता.

नहीं, मैं नहीं बैठूंगा उस कुर्सी पर!

लेकिन भागता हुआ उसका जिस्म एकाएक हवा में उठ गया-

ओफ! नहीं sss

वही कुर्सी! नहीं sss मेरा ब्रेनवाश करने की बजाय मुझे मार डालो-ल...

और जैसे वह कुर्सी पर पहुंचा उसके मुंह के शब्द मुंह में ही रह गये- क्योंकि अब उसका पूरा जिस्म ही नहीं मस्तिष्क भी जड़ हो गया था।

और फिर एक ऐसी प्रक्रिया आरम्भ हो गयी- जिसकी समाप्ति पर पृथ्वी पर एक नई दुनिया बसाने का स्पन देखने वाला डा० सीराज मानवता से प्रेम करने वाला डा० सीराज बन जाने वाला था-

तभी फौलाद और लम्बू भी अन्य वैज्ञानिकों के साथ वहां ट्रांसमिट होते नज़र आये।

फिर तीस सेकिन्ड बाद...

फौलाद! डा० सीराज को इंजेक्शन लगा दो- ताकि यह होश में आ जाए और...

और इंजेक्शन लगने के बाद जब उसे होश आया तो उसके चेहरे पर शान्ति तथा सन्तुष्टि के भाव तथा प्रसन्नता भरी मुस्कुराहट थी।

डा० जॉन मैं नहीं जानता कि यह सब कैसे हो गया- पर सच मानिये- अब मुझे इस बात की खुशी है कि मैं पराजित हो गया- इस प्रकार मेरे हाथों होने वाला सर्वनाश रुक गया- मैं अपने आपको कभी क्षमा नहीं कर पाता!

पिछली बातों को भूल जाओ डा० सीराज- पहले तुम एक शाही परिवार के इकलौते वारिस थे- पुरखों की दौलत तथा विज्ञान के क्षेत्र में कई चमत्कार दिखा देने की वजह से तुम्हारे मस्तिष्क में बुरे ख्यालात पनपने लगे थे- पर अब तुम्हारे मस्तिष्क के उस विकृत हिस्से की सफाई हो चुकी है जहां बुरे ख्यालात पनप रहे थे- अब तुम मानवता से प्रेम करने वाले एक श्रेष्ठ वैज्ञानिक हो- और यह सब तुम्हारे द्वारा अपहृत किये गये वह वैज्ञानिक तथा 'तकनीशियन हैं जिन्हें तुम अपनी नई दुनिया के नागरिक बनाना चाहते थे- अब यह सब स्वेच्छा से तुम्हारा साथ देने के लिये तैयार हैं- और तुम अब भी अपने तीनों अन्तरिक्ष नगरों के स्वामी हो- और मुझे आशा है कि तुम और तुम्हारे यह सब सहयोगी भविष्य में इन अन्तरिक्ष नगरों में रहते हुए अपनी पृथ्वी तथा पृथ्वी पर बसे मनुष्यों की सेवा करोगे।

आपकी यह सीख मैं हमेशा याद रखूंगा- और इस पर पूरी श्रद्धा से अमल करूंगा.

हम सब भी डा० सीराज का अनुशरण करेंगे!

और अब विदा दोस्तो! भविष्य में हमें जब भी आपसी सहयोग की आवश्यकता होगी-तब फिर मुलाकात होगी!

विदा!

विदा!

विदा डा० जॉन!

और फिर टापू पर जहां भारत और अन्तरिक्षक उनसे पहले पहुंच चुके थे।

यह आपने क्या किया अकल- उन अन्तरिक्ष नगरों में उसे स्वतन्त्र छोड़ दिया- पहले उसे परख तो लिया होता कि वह भविष्य में आपनी आज्ञानुसार काम करेगा भी या नहीं!

फोलाद- अपनी हमेशा सतर्क और सावधान रहने की आदत के अनुसार मैंने उन तीनों अन्तरिक्ष नगरों में ऐसी व्यवस्था कर दी है जिसके द्वारा वह तीनों अन्तरिक्ष नगर हमारे टापू के अप्रत्यक्ष नियन्त्रण में रहेंगे! मुझे जिस क्षण उन...

...अन्तरिक्ष नगरों में कोई गड़बड़ नजर आयेगी- तुम उसी क्षण उन्हें पूर्णतया अपने टापू के कम्प्यूटरों के नियन्त्रण में देखोगे- वह होने वाली प्रत्येक हलचल प्रतिपल हमारे टापू की निगाह में रहेगी

आपका मतलब तीनों अन्तरिक्ष नगर डा० सीराज के आधिकार में होते हुए भी- वह टापू की शक्ति का ही एक अंग बने रहेंगे!

जबकि मैं आपकी रिस्टवाच में समय देख रहा हूं!

क्यों क्या तुम्हें कहीं जाना है?

नहीं, फोलाद मैं देख रहा हूं कि इस सारे हंगामें की शुरूआत कुल पांच मिनट पहले शुरू हुई थी!

यानि कि जिस समय तुम दोनों और हम दोनों पृथ्वी पर आने वाले जहरीले कम्प्यूटर बमों को अन्तरिक्ष में ही नष्ट करने के लिये अपने इस टापू से अन्तरिक्ष में ट्रांसमिट हुए थे तब ठीक छः बजकर इकतालिस मिनट का समय था- और अब छः बजकर छियालिस मिनट पर हम वापस अपने टापू पर पहुंच गये!

अन्य लोगों के लिये भले ही यह हैरानी की बात हो सकती है- पर हम सबके लिये एक साधारण बात है।

लेकिन डायमण्ड कॉमिक्स के पाठकों के लिये तो यह हैरानी की बात होगी ही कि पांच मिनट पहले पृथ्वी पर आया यह संकट जो सिर्फ पांच मिनट के जबरदस्त टकराव और हंगामें के बाद समाप्त हो गया है इसे चित्रकथा के रूप में पढ़ने के लिये ही उन्हें कम से कम एक डेढ़ घण्टा लग गया।

समाप्त

डायमंड कामिक्स

पेश करते हैं—
भारत में पहली बार 144 पृष्ठों में मनोरंजन ही मनोरंजन

डायमंड कामिक्स डाइजेस्ट

महाबली शाका के कारनामें
महाबली शाका और बौनों का संग्राम
महाबली शाका और काला बाज
महाबली शाका और दैत्यों का खजाना

मामा भांजा के कारनामें
मामा भांजा और बुद्धूराम
मामा भांजा और अंधी औरत
मामा भांजा और बेईमान नाटेचन्द
मामा भांजा और लंगड़ी चुड़ैल
मामा भांजा और महामूर्ख पिल्लू
मामा भांजा और चतुर खरगोश
मामा भांजा और चतुर केकड़ा
मामा भांजा और चतुर गीदड़
मामा भांजा और ताऊजी की मूछ
मामा भांजा और दस अवतार
मामा भांजा और चौबे जी का जूता
मामा भांजा और भैंस की पूंछ
मामा भांजा और बातूनी औरत
मामा भांजा और कंजूस सेठ
मामा भांजा और बीरबल की सूझबूझ
मामा भांजा और जादुई कलम

युद्ध चित्र कथा
माटी मेरे देश की
नहीं बिकेगी यह धरती
मेरा वतन मेरा चमन
वतन की कसम
धरती मांग रही बलिदान
माटी मांगे खून
लहू मांगे इन्साफ
अब वतन आजाद है

चित्रमय जीवनी माला
शांति की मसीहा इंदिरा गांधी
अमिताभ बच्चन फिल्मों से संसद तक
आशाओं आकांक्षाओं के
प्रतीक राजीव गांधी

लम्बू मोटू के कारनामें
लम्बू मोटू और किले की तबाही
लम्बू मोटू और पत्थर की लाश
लम्बू मोटू और खानून का हत्यारा
लम्बू मोटू और दो दीवाने
लम्बू मोटू और वतन के पहरेदार
लम्बू मोटू और मौत से संग्राम
लम्बू मोटू और युद्ध की आग
लम्बू मोटू और सरहद की ज्वाला
लम्बू मोटू और मौत का बादशाह
लम्बू मोटू और धरती का संग्राम
लम्बू मोटू और वतन के मतवाले
लम्बू मोटू की ड्राकुला से टक्कर
लम्बू मोटू और तिरंगे के दुश्मन
लम्बू मोटू और अंतरिक्ष में सैर

चाचा भतीजा के कारनामें
चाचा भतीजा और सर्प भवानी
चाचा भतीजा और जासिम जादूगरनी
चाचा भतीजा और खतरनाक यन्त्र
चाचा भतीजा और हत्यारी तलवार
चाचा भतीजा और पत्थर की देवी
चाचा भतीजा और मौत का गीत
चाचा भतीजा और पाताल लोक
चाचा भतीजा और प्रेतों की रानी
चाचा भतीजा और अम्बू से टक्कर
चाचा भतीजा और पर्वत देवता
चाचा भतीजा और नीलमणि

डब्बू के कारनामें
डब्बू जी और उल्टी गंगा
डब्बू जी और चन्दू लाल
डब्बू जी पागल बने
डब्बू जी और बूढ़ राम
डब्बू जी नेता बनने चले

कैप्टन विकास के कारनामें
कैप्टन विकास और डैथ मिरर
कैप्टन विकास और अंतरिक्ष में सर्वनाश

पलटू के कारनामें
पलटू और जादुई टोली
पलटू और भयानक ड्रैगन
पलटू और जादुई संदूक
पलटू और बुलडाग से टक्कर
पलटू और लालच का फल
पलटू और तोंद का चक्कर
पलटू और चतुर कौआ
पलटू और कराटे उस्ताद
पलटू और चाकलेट का पेड़
पलटू और बेचारे मालिक साहब
पलटू और मोटू छोटू
पलटू और सबसे बड़े जोकर
पलटू और बांसुरी वाला
पलटू और दैत्य का बदला
पलटू और जादू की टोकरी
पलटू और गोलू पतीले
पलटू और चिम्पू की सूझबूझ
पलटू और नाद की टोपी

फौलादीसिंह के कारनामें
फौलादीसिंह और मौत की धरती
फौलादीसिंह और चक्रव्यूह का मसीहा
फौलादीसिंह और डिक्टेटर की तबाही
फौलादीसिंह और अन्तरिक्ष की प्रेतात्मा
फौलादीसिंह का आखरी संग्राम
फौलादीसिंह और विचित्र अण्डा
फौलादीसिंह और रिपक्वली का प्रतिशोध
फौलादीसिंह और अंतरिक्ष का भगवान
फौलादीसिंह और डार्कस्पैण्ड का शैतान
फौलादीसिंह और पृथ्वी के चोर
फौलादीसिंह और अन्तरिक्ष में तबाही
फौलादीसिंह अजनबी गृह में
फौलादीसिंह और कारकोला का चक्रव्यूह

मोटू छोटू के कारनामें
मोटू छोटू और मकड़ दादा
मोटू छोटू और मुंछों का रूमाल

पिंकी के कारनामें
पिंकी की पप्पी
पिंकी और रंगीन कैमरा
पिंकी और चैरिटी का टिकट
पिंकी और साबुन के बुलबुले
पिंकी और मल्लिका का खिताब
पिंकी और मिला चिलगोजा
पिंकी और दादा जी का अखबार
पिंकी और झपट जी की पतंग
पिंकी और बंगाली रसगुल्ले
पिंकी और मुफ्त के बेर
पिंकी और नानी की जवानी
पिंकी का पिल्ला

मोटू पतलू के कारनामें
मोटू पतलू और जूते का हंगामा
मोटू पतलू और जंगल में मंगल
मोटू पतलू बागलखाने में
मोटू पतलू और ऐशियन खेल
मोटू पतलू और चेलाराम का अपहरण
मोटू पतलू और परियों का हंगामा
मोटू पतलू और उड़न तश्तरी
मोटू पतलू और मौत का जाल
मोटू पतलू और गुफा का खजाना
मोटू पतलू और बौनों के देश में

छोटू लम्बू के कारनामें
छोटू लम्बू और अदभुत बूम
छोटू लम्बू और अंजाना अपराध
छोटू लम्बू और मिस्टर एक्स
छोटू लम्बू और देश के दुश्मन
छोटू लम्बू की अनोखी सजा
छोटू लम्बू और बांके बिहारी

ताऊजी के कारनामें
ताऊजी और चांदी का किला
ताऊजी और लकड़ी का बंदर
ताऊजी और तिलस्मी षडयंत्र
ताऊजी और रुमझूम का हंगामा
ताऊजी और तिलस्मी खंजर
ताऊजी और पूंछ वाला दैत्य
ताऊजी और गोलपरी का अपहरण
ताऊजी और अत्याचारी का आतंक
ताऊजी और जादूगर साम्भा
ताऊ जी और जादूगर नारमणि

चाचा चौधरी के कारनामे
चाचा चौधरी और साबू का हथौड़ा
चाचा चौधरी और चंपत संपत
चाचा चौधरी और उड़ने वाली कार
चाचा चौधरी और साबू पर हमला
चाचा चौधरी और हाथी का व्यापार
चाचा चौधरी बिल्लू और पिंकी
चाचा चौधरी और राका की वापसी
चाचा चौधरी और धमाका
चाचा चौधरी और साबू की शादी
चाचा चौधरी अमेरिका में
चाचा चौधरी और साबू का बूट
चाचा चौधरी और क्रिकेट मैच
चाचा चौधरी और रहस्यमय चोर
चाचा चौधरी और राका
चाचा चौधरी और साबू काले टापू पर
चाचा चौधरी और शिकारी लकड़बग्घासिंह
चाचा चौधरी और कैराटे सम्राट
चाचा चौधरी और बैंक के लुटेरे
चाचा चौधरी और बोतल का जिन्न
चाचा चौधरी और बैंक के लुटेरे
चाचा चौधरी की गब्बरसिंह से टक्कर
चाचा चौधरी और अकबरी खजाना
चाचा चौधरी और साबू का अपहरण
चाचा चौधरी अन्तरिक्ष में
चाचा चौधरी और आदमखोर
चाचा चौधरी और पोपट लाल
चाचा चौधरी और पलीते की कमर

अण्डेराम डण्डेराम के कारनामें
अण्डेराम डण्डेराम और होटल में हंगामा
अण्डेराम डण्डेराम और खटारा कार

राजन इकबाल के कारनामें
राजन इकबाल और सापों के सौदागर
राजन इकबाल और डमडम का कमाल
राजन इकबाल और लाल हवेली का प्रेत
राजन इकबाल और कानी औरत
राजन इकबाल और खून पीने वाले
राजन इकबाल और विचित्र अपराधी
राजन इकबाल और काला भेड़िया
राजन इकबाल और भुतिया खण्डहर
राजन इकबाल और चौराहे का कातिल
राजन इकबाल और आठ करोड़ का हार
राजन इकबाल और सफेद बिल्ली
राजन इकबाल और इन्टरनेशनल गैंग
राजन इकबाल और खजाने के दीवाने
राजन इकबाल और मौत का फंदा

रमन के कारनामें
रमन और खलीफा की दाढ़ी
रमन और दस लाख की लाटरी
रमन, हम एक हैं
रमन और चौक्का छक्का
रमन और रहस्यमय खजाना

पिकलू के कारनामें
पिकलू और काल चीता
पिकलू और विक्रम बेताल
पिकलू और धूर्त सियार
पिकलू और शेर का सपना

अंकुर के कारनामें
अंकुर और लकड़ी का राजकुमार
अंकुर और ड्रैकुला का खजाना
अंकुर और डायनासोर से टक्कर
अंकुर और खूनी गुलाब
अंकुर और मक्काल के पुजारी
अंकुर और मुर्दे की लाठी
अंकुर और सफेद कबूतर
अंकुर और जोकर की वापसी
अंकुर और दुष्ट असलम
अंकुर और उड़ने वाला मकान
अंकुर और जादुई कबूतर
अंकुर और जहाज का अपहरण
अंकुर और कानी जादूगरनी
अंकुर और मासूम भिखारी
अंकुर और चमत्कारी पेंसिल
अंकुर और चालाक चौकीदार
अंकुर और चार चोर
अंकुर और बौना जासूस
अंकुर और गोलगप्पे बम्ब
अंकुर और जूतों का रहस्य
अंकुर और भूत बंगला
अंकुर और जासूसी का चक्कर
अंकुर और चौकी नं० जीरो
अंकुर और बेचारा असलम

बिल्लू के कारनामें
बिल्लू 1
बिल्लू 2
बिल्लू 3
बिल्लू पिकनिक पर
बिल्लू की सोफटी
बिल्लू का हंगामा
बिल्लू का होमवर्क

जासूस चक्रम सीरीज
जासूस चक्रम और अनोखा ब्लैकमेलर

चिम्पू के कारनामें
चिम्पू और कातिलों की टोली

3-D कामिक्स
जंगल की रानी
भयानक मौत
चिम्पू पिकलू और भोलू गोलू
अनोखा चिड़ियाघर

आलतूरामफालतूराम के कारनामें
आलतूराम फालतूराम चले सुबह की सैर करने

फिल्मी चित्रकथा
आखिरी रास्ता
मुठ्ठी
जांबाज
समुद्र
काला धन्धा गोरे लोग
पापी पेट का सवाल है
सलमा
मास्टर जी
शराबी
धर्म और कानून
पसन्द अपनी-अपनी
बाक्सर
इन्कलाब
जबरदस्त
बादल
सागर
दुर्गा लैला
साहेब
जान जानी जनार्दन
लव 86
चमेली की शादी
मैं अवारा हूं

यहाँ से काटिये-
इस तरह के
30 कूपन काटकर
हमें भेजें और
चाचा चौधरी
ऐजुकेशनल
प्लेयिंग कार्ड फ्री
प्राप्त करें।
जल्दी करें स्टाक
सीमित है।

डायमंड कॉमिक्स प्रा.लि. 2715, [illegible] 110002

डायमंड पाकेट बुक्स में

'स्वामी' की अपार सफलता के बाद
प्रतिभाशाली उपन्यासकार
राजहंस का भावनापूर्ण उपन्यास

सिसकता सवेरा

सुरेन्द्र मोहन पाठक का 'विमल सीरीज' का जासूसी उपन्यास

दौलत और खून 6/-

एहुल का नया रोचक उपन्यास

अन्तिम दाँव 6/-

उभरते उपन्यासकार
सत्यपाल
का नया उपन्यास

पत्थर के लोग 6/-

चेतना का नया भावनापूर्ण उपन्यास

सोने का घरौंदा 6/-

जनप्रिय लेखक
अमर पुरस्कार कुमार
का भावनापूर्ण उपन्यास

दूसरा ताजमहल 6/-

मुसाफिर
का नया उपन्यास

सात फेरे 6/-

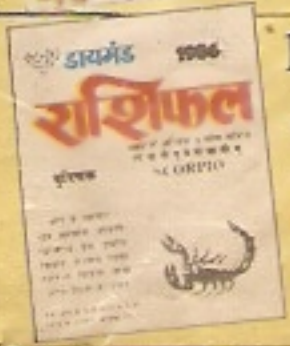

1987 में आपका भविष्य
डायमंड

राशिफल

सम्पूर्ण 12 राशियां
अलग-अलग पुस्तकों में
मूल्य प्रत्येक 3/-

डायमंड कामिक्स प्रा लि 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002